MUSIC STUDY MATERIAL FOR CLASS 12TH BASED ON NCERT

Barun Maji Date : 11.01.21

Time theory of raags in hindi

राग और समय

- भारतीय संगीत की यह प्रमुख विशेषता है कि प्रत्येक राग के गाने-बजाने का एक निश्चित समय माना गया है। शास्त्रकारों ने अपने अनुभव तथा मनौवैज्ञानिक आधार पर विभिन्न रागों के पृथक-पृथक समय निश्चित किये हैं।
- भारतीय संगीत में निम्नलिखित चार सिद्धांतों के आधार पर रागों का समय निश्चित किया है-

(1) अध्वदर्शक स्वरR11;

उत्तर भारतीय संगीत में मध्यम स्वर को बडा महत्व प्राप्त है। इस स्वर के द्वारा हमें यह मालूम पड़ता हैं कि किसी राग का गायन वादन दिन हो सकता है अथवा रात्रि, इसलिये मध्यम को अध्वदर्शक स्वर कहा गया है।

- 24 घंटे के समय को दो बराबर भागों में विभाजित किया गया है। सर्वसम्मति से प्रथम भाग को पूर्वार्ध जिसका समय 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि तक और द्वितीय भाग को उत्तरार्ध जिसका समय 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन तक माना जाता है।
- पहले भाग की अवधि मेंअर्थात पूर्वार्ध में तीव्र म और उत्तरार्ध में शुद्ध मध्यम की प्रधानता पाई जाती है। उदाहरणार्थ भैरव और बहार रागों को लिजिए दोनों में शुद्ध म का प्रयोग किया जाता हैं। इनका निश्चित समय मालूम न होने पर कम से कम इतना कह.सकते हैं कि इनका गायन समय 12 बजे रात्रि के बाद से से 12 बजे दिन की अवधि में किसी समय होगा।
- इसी प्रकार पूर्वी, मारवा, मुलतानी आदि रागों को ले लिजिये इनके तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता हैं। इनके गायन समय का स्थूल अनुमान अध्वदर्शक स्वर की सहायता से सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है।
- इस नियम के अनेक अपवाद भी है उदाहरणार्थ बसंत राग को ले लिजिए। इसमें दोनों मध्यम अवश्य प्रयोग होते है, लेकिन तीव्र मध्यम प्रधान रहता है। कुछ लोग तो शुद्ध मध्यम लगाते ही नहीं। इस दृष्टि से इसका गायन- वादन पूर्वार्ध में होना चाहिये, किन्तु ये रात्रि के प्रथम पहर में गाया जाता है जो उत्तरार्ध में आता है। इसी प्रकार परज, हिंडौल, तोड़ी, भीमपलासी, बागेश्वरी, दुर्गा, देश आदि राग उपर्युक्त नियम का खण्डन करते है।